ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-9* December-2020
Anthology : The Research

विद्यालयी शिक्षा – समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता (डॉ.लोहिया के विचारों में)

School Education - Need For A Holistic Approach (In Dr. Lohia's Thoughts)

Paper Submission: 05/12/2020, Date of Acceptance: 23/12/2020, Date of Publication: 24/12/2020

प्रेमलता मिश्रा
सहायक प्राध्यापक,
राजनीति शास्त्र विभाग,
गवर्नमेंट के. आर. डी कॉलेज.
मुंगेली रोड, नवागढ़, बेमेतरा,
छत्तीसगढ़, भारत

सारांश

शिक्षा का महत्व सर्वविदित है, कोई भी समाज और राज्य शिक्षा की अवहेलना कर स्वयं को गर्त में ढकेलने का दुस्साहस नहीं करेगा।

शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्ति हेतु सक्षम होना ही नहीं है, बल्कि मानव गुणों का विकास तथा समाज एवं राज्य के साथ सकारात्मक तारतम्य स्थापित करना भी है। स्वयं तथा अपने क्षेत्र समाज व राज्य का विकास ही शिक्षा का मूल उद्देश्य होना चाहिये।

The importance of education is well known, no society and state will dare to defy education and push themselves into the trough.

The aim of education is not only to be able to get employment, but also to develop human qualities and establish positive relations with society and the state. Development of self and our region, society and state should be the primary objective of education.

मुख्य शब्द : शिक्षा, समृद्धि विकास, समग्र दृष्टिकोण, समाजवादी विचारधारा।
Education, Prosperity Development, Holistic Approach, Socialist Ideology.

प्रस्तावना

शिक्षा का महत्व इसी तथ्य से पता चलता है कि प्रत्येक समाज सुधारकों, राजनीतिक, आर्थिक, समाजिक चिंतकों ने शिक्षा को अपने आंदलनों एवं विचारों का मूल आधार बनाया। स्वयं के विचारों के अनुकूल व्यवस्था स्थापित करने हेतु देश में सबसे पहला प्रहार (परिवर्तन) शिक्षा व्यवस्था में ही किया जाता रहा है, चाहे वे साम्यवादी हो, अधिनायकवादी हों या प्रगतिशील लोकतांत्रिक शासक हों।

भारत में स्वतंत्रता के पश्चात् तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था में आमूल चूल परिवर्तन नहीं किया गया, परंतु समय–समय पर आंशिक परिवर्तन अवश्य किये गये। इन परिवर्तनों में भी कभी एक कारक को अधिक महत्व दिय गया तो दूसरे कारकों की उपेक्षा की गई। फलतः अपेक्षित परिणाम नहीं मिल पाये। जितने अधिक प्रयोग शिक्षा व्यवस्था में किये गये संभवतः उतने अन्य किसी भी क्षेत्र में नहीं किये गये। फिर भी वर्तमान शिक्षा अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में असफल रही है।

प्रसिद्ध एडवोकेट विमल वाघवान का कथन सत्य है कि '' वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था इस लक्ष्य पर कोई भी प्रयास करने में विफल रही है कि रचनात्मक सोच के आधारभूत मूल्य कौन से है जिन्हे एक देश के नागरिकों को अपने चरित्र की तरह धारण करना चाहिये।''

कोई भी व्यवस्था संपूर्ण रूप से न तो दोष मुक्त होती है और न ही दोष युक्त, क्योकि अंततः व्यवस्था मनुष्य के द्वारा बनाई व संचालित की जाती है। परंतु अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु अधिकतम क्षमता से कार्य करने की प्रवृत्रि तो होनी ही चाहिये। यह भी सत्य है कि किसी भी व्यवस्था को सफल बनाने हेतु कोई एक कारक प्रभावी नहीं होता ऐसा भी नहीं है कि शिक्षा संबंधी पूरी नीतियां एवं व्यवस्था निरर्थक है या कोई भी परिवर्तन बिना सोचे समझे किया गया है। प्रश्न यह है कि नई नीतियों एवं कार्यक्रमों का कियान्वयन किस तरह से किया गया। जमीनी स्तर पर कियान्वयन सबसे बड़ी समस्या है जहॉ पर भी सही कियान्वयन हुआ परिणाम भी अच्छे रहे हैं। अधिकांश लोगों की यह प्रवृत्ति

रहती है कि जब उन पर नजर रखी जाती है तब अच्छा काम करते हैं अन्यथा लापरवाह हो जाते हैं यह बहुत अधिक घातक सिद्ध हो रहा है। निरीक्षण और नियंत्रण की अत्यधिक आवश्यकता उपरोक्त प्रवृत्ति के कारण भी बढ़ी है, परिणाम स्वरूप भ्रष्टाचार पक्षपात आदि की दुष्प्रवृत्तियां भी बढ़ी है। इन दुष्प्रवृत्तियों का विपरीत प्रभाव गरीबवर्ग एवं ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक हुआ है। संभ्रातवर्ग ने तो अपने लिये पूरी सुविधायें जुटाली। अपने बच्चों के लिये महंगे से महंगे शैक्षणिक संस्थायें भी चुन ली, अतः सरकारी विद्यालय उपेक्षा के शिकार रहे, इसलिये शिक्षा का मूल उद्देश्य पूरा करने मे असमर्थ रहे।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की तीन प्रमुख कमियां हैः–

1. मानवीय गुणों का पर्याप्त विकास न कर पाना
2. जीवन यापन हेतु अधिकतम लोगों को सक्षम न बना पाना
3. हर वर्ग के लोगों के बीच समानता न ला पाना बल्कि असमानता बढ़ाने वाला।

उपरोक्त कमियों का मुख्य कारण शिक्षा व्यवस्था में एक रूपता का न होना। लार्ड मैकाले की शिक्षा व्यवस्था की सभी आजतक आलोचना करते हैं और आज तक दोषी ठहराते हैं, पर यह कटु सत्य है कि आज की शिक्षा व्यवस्था भी लगभग वैसी ही है। जब यहॉ की तकनीकी शिक्षा व्यावहारिक धरातल पर अधिक उपयोगी सिद्ध नहीं हो रहा है तो अन्य पाठ्यक्रमों की स्थिति से तो सभी अवगत हैं।

पूरी शिक्षा व्यवस्था का अत्यन्त महत्वपूर्ण भाग प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा का है कक्षा 10 तक की शिक्षा यदि अपने मुख्य उद्देश्यों को पूरा करने में सफल होती है तो उच्च शिक्षा की गुणवत्ता का स्तर स्वमेय सुधर जायेगा। शिक्षा के क्षेत्र में भी नींव की सुदृढ़ता अनिवार्य है।

शिक्षा के क्षेत्र में शासकीय के साथ–साथ अशासकीय (निजी) संस्थायें भी संचालित है। कुछ निजी संस्थाओं को सरकार से अनुदान भी प्राप्त होते हैं। शासन के द्वारा भी अनेक प्रकार की योजनाओं के तहत् विद्यालय संचालित हैं। जवाहर नवोदय विद्यालय, केन्द्रीय विद्यालय, रेल्वे के विद्यालय, सैनिक विद्यालय, आवासीय विद्यालय आदि, राज्य सरकारें भी कई तरह के विद्यालय संचालित करती हैं। इनमें पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन पद्धति की भी भिन्नता होती है अर्थात् प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर पूरे देश में एकरूपता का अभाव है । देश की शिक्षा व्यवस्था पर चर्चा एवं मूल्यांकन की आवश्यकता है कि इन अलग–अलग तरह की व्यवस्थाओं में खर्च और उससे उद्देश्य प्राप्ति की स्थिति क्या है।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था का अध्ययन एवं मूल्यांकन कर उसमें सुधार व परिवर्तन लाने हेतु डॉ. राम मनोहर लोहिया के विचार अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होंगे। यद्यपि यह दावा नहीं किया जा सकता के डॉ. लोहिया के विचार पूरी तरह प्रासंगिक है, फिर भी शिक्षा के संबंध में उनका दृष्टिकोण अत्यंत व्यापक एवंज न उपयोगी है। सुधार व परिवर्तन को सही दिशा देने में सक्षम भी है।

डॉ. राम मनोहर लोहिया प्रसिद्ध भारतीय समाजवादी चिंतक, समाज सुधारक राजनीतिज्ञ व प्रखर सांसद थे। कार्ल मार्क्स और महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित होने के बाद भी उनके चिंतन में मौलिकता तथा भारतीयता के स्वर विद्यमान थे।

डॉ. लोहिया की विशेषता थी कि वे किसी भी समस्या के प्रति समग्र दृष्टिकोण रखते थे अतः समाधान भी उसी दृष्टिकोण से चाहते थे। समस्या के सभी पहलुओं को ध्यान में रखने से ही उनका समाधान व्यावहारिक हो सकता है। डॉ. लोहिया का सप्तक्रांति का विचार भी इसी दृष्टिकोण का परिचायक है।

डॉ. लोहिया के शिक्षा संबंधी विचारः–

शिक्षा का उद्देश्य

डॉ. लोहिया के अनुसार– ''शिक्षा का पहला और बुनियादी उद्देश्य है – योग्यता और कर्म कौशल हासिल कर अपनी आर्थिक स्थिति में सुधारलाना, दूसरा उद्देश्य है दुनिया के बारे में समझ और सहानुभूति हासिल करना। दिमाग खुला और छाती चौड़ी शिक्षा के उच्चतम उद्देश्य है।

स्पष्ट है डॉ. लोहिया शिक्षा का उद्देश्य सहृदयता स्वालम्बन एवं स्वाभिमान के विकास को मानते हैं।

शिक्षा की पद्धति

शिक्षा के उद्देश्य की पूर्णता शिक्षा पद्धति पर निर्भर करती है। डॉ. लोहिया ने शिक्षा के दो आदर्श का उल्लेख करते हुये कहा– '' अमरीकी लोगों के सामने शिक्षा के दो आदर्श थे एक जर्मन और दूसरा अंग्रेजों का।

अंग्रजी शिक्षा आंकड़ों, सूचनाओं तथा जानकारी पर निर्भर रहती है और जर्मन शिक्षा दृष्टि और तरीकों पर जोर देती है। अंग्रेज अध्यापक जानकारी और सूचनाओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं। जर्मन अध्यापक शिक्षार्थी के तर्क और खोज करने की आदत को जागृत करने का प्रयत्न करते हैं। जर्मन शिक्षा संस्थाओं में कोई भी विद्यार्थी किसी भी अध्यापक से शिक्षा ग्रहण कर सकता है, यहॉ तक कि उसे अपना परीक्षक चुनने की भी छूट रहती है।

डॉ. लोहिया के अनुसार– ''अध्ययन की पद्धति या तरीका विद्यार्थी के निर्णय पर अधिक निर्भर करता है, क्योंकि जानकारी और दृष्टि सर्वथा अलग नहीं रखी जा सकती है। पढ़ाने के तरीके में स्वतंत्रता रहना आवश्यक है तभी अध्ययन के साथ–साथ एक दृष्टि दुनिया को जानने का एक ढंग बनता जाता है। शिक्षा के साथ तर्क और एक प्रकार की दृष्टि का भी निर्माण भी जरूरी है, अन्यथा शिक्षा जिंदगी में किसी भी प्रकार की चेतना नहीं ला सकती। तर्क जानकारी और दृष्टि में तारतम्य स्थापित करना है।

भारत में शिक्षा की वास्तविकता

डॉ. लोहिया ने भारत में शिक्षा की स्थिति पर लिखा है– ''भारत में शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन की बातचीत बड़े जोर–शोर से की जाती है किंतु हर शिक्षा योजना का उद्देश्य यही होता है कि किस क्लास की पढ़ाई कितने वर्षों की हो या दूसरा उद्देश्य यह होता है कि यह विषय उस विषय के साथ न पढ़ाया जाये या उस विषय को इस विषय के साथ पढ़ाया जाये।

वर्तमान शिक्षा चलाने वाले शिक्षा का उद्देश्य सेवा बतलाते हैं किंतु वे स्वयं ऊंची शिक्षायें लेकर

बड़े–बड़े ओहदों पर मौजुद है, और आराम तथा शान का जीवन व्यतीत करते है । अतः उनके सेवा वाली शिक्षा की अपील का कोई असर नही पड़ता। शिक्षा के ये मालिक जीवन में सफलता प्राप्त लोग हैं। एक ओर तो 16 से 18 वर्ष के युवकों को राजनीति से अलग रहने का उपदेश दिया जाता है। दूसरी ओर 7–8 साल के बच्चों को कवायद की ट्रेनिंग दी जाती है, जिससे वे विदेशी राज पुरूषों को आगमन या स्वतंत्रता समारोह के अवसर पर अथवा जन्म दिवस पर चाचा जिन्दाबाद के साथ सलामी दें। इस प्रकार का पाखंड पूरे देश पर बुरी तरह जम गया है।

डॉ.लोहिया ने कहा– शिक्षा बड़ी महंगी होती जा रही है , उनकी तरफ एक बिल्कुल साफ इच्छा और षडयंत्र मालूम होता है कि ज्यादा तादाद में लोगों की पढ़ने मत भेजो। रूकावटें डालो दूसरे दर्जे में और तीसरे दर्जे में पास लड़कें ऊँची शिक्षा न पायें। शिक्षा ठीक भी नहीं दी जाती, विषय ज्ञान उसमें नहीं आ पाता।

शिक्षा पर एकाधिकार के संबंध में डॉ. लोहिया ने कहा– '' भारत में दूषित बनने का ही नतीजा है कि 7 करोड़ द्विज में से 5 लाख द्विज और 17 करोड़ शूद्रों में से 1 लाख शूद्र शिक्षा ग्रहण कर पाते हैं। शेष की प्रतिभा तथा सेवा का उपयोग नहीं हो सकता।

डॉ.लोहिया ने अंग्रेजी को प्रजातंत्र, गणतंत्र और समाजवाद के लिये घातक बताया क्योंकि इससे कुछ लोगों के हाथों में ही सत्ता रहेगी। उनके अनुसार हिन्दुस्तान के गरीब बच्चों के लिये तो ऐसे स्कूल खोज रखे हैं जिनमें छठै, सातवें, आठवें तक अंग्रेजी भगा दी गई है और बड़े लोगों के लिये ऐसे स्कूल रखे गये हैं , जिनमें थे अपने बच्चों के शुरू से ही अंग्रेजी सिखा पाये या अंग्रेजी माध्यम से सिखाये। शायद भाषा के कारण शिक्षा की परंपरा टूट गई है और शिक्षा का पौधा देश की मिट्टी से अपना आहार नहीं पा रहा है। 90 प्रतिशत जनता का आज शिक्षा से बहुत कम संबंध है।

गरीब और मध्यम वर्ग और किसान भी अपने बच्चों को ऊँची पढ़ाई के लिये पेट काट कर रूपया खर्च करता है। उससे न तो उन्हें फायदा हो रहा है न देश को मौजुदा शिक्षा में खोज और हुनर के अभाव का सबसे बड़ा कारण है, विदेशी भाषा का प्रचलन इसने देश को नकलची पन दे दिया है।

डॉ. लोहिया के अनुसार '' किसी भी प्रकार के वैज्ञानिक विकास के लिये प्राथमिकता का क्रम होना चाहिये योग्य व्यक्ति, साज–सामान, ईमारतें। दिखावे की इच्छा के कारण योग्य व्यक्तियों के बजाय ईमारतों पर जोर दिया गया है। हमारे यहॉ वैज्ञानिक और तकनीकी व्यक्तियों की कमी नहीं है, जैसा कि कुछ लोग सोचते हैं, किन्तु ऐसे संगठन का अभाव है जो उनका उपयोग करें, इसी कारण बिखरे हुये हैं।

डॉ. लोहिया ने बार–बार पाठ्यक्रमों को बदलने व उनकी विषय वस्तु की भी आलोचना की , उन्होनें कहा – '' स्कूल शिक्षा का एक घृणित पहलू है बच्चों के पाठ्यक्रमों को बदलना, जिनमें पार्टी के नेताओं, सैन्यवाद तथा पतिव्रता पत्नी जैसी अमानवीय प्रथाओं का महिमामंडन होता है।

वे शिक्षा व्यवस्था में भेदभाव खत्म करने के पक्षधर थे। उन्होनें कहा ''देहरादून वाली शिक्षा से उनकी जानकारी तो छिछली रहती ही है तथा एक अजीब प्रकार के शिष्टचार की ट्रेनिंग मिलती है जो समाज में प्रारंभ से ही असमानता और शोषण की बुनियाद डालती है।'' हम प्रायः जन्म और धन की असमानताओं से वाकिफ हैं किन्तु हमें उन असमानताओं के प्रति भी सावधान रहना चाहिये, जो भाषा और प्रतिभा से पैदा होती है।

डॉ. लोहिया दो प्रकार की शिक्षा संस्था के विरोधी थे क्योंकि एक प्रति विद्यार्थी खर्च आठ आने और दूसरे दो सौ रुपये मासिक। डॉ. लोहिया के उपरोक्त विचारों के वर्णन से स्पष्ट है कि वे भारत की तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था को बच्चों के विकास के अनुकूल नहीं मानते थे तथा इस शिक्षा व्यवस्था को हर तरह की असमानता बढ़ाने का एक प्रमुख कारक मानते थे। स्पष्टतः दो प्रकार के विद्यालय जो आर्थिक आधार पर चल रहे थे और चल रहे हैं सामाजिक समरसता स्थापित करने में पूरी तरह असमर्थ है।

भारत मे स्वतंत्रता के पश्चात् लोकतांत्रिक समाजवाद का लक्ष्य रखा था और आज सामाजिक क्षेत्र में समाजवाद का लक्ष्य है भले ही आर्थिक क्षेत्र में पूंजीवाद को अपना लिया गया है। इन परिस्थितियों शिक्षा व्यवस्था विशेषकर विद्यालयीन शिक्षा के व्यापक पैमाने में परिर्वतन की आवश्यकता है।

1 अप्रैल 2010 से शिक्षा का अधिकार फिर भी लगभग एक करोड़ बच्चे अभी भी शिक्षा से दूर है, निजी विद्यालयों में 25 प्रतिशत निर्धन बच्चों को प्रवेश देना है, परन्तु वे इससे किसी न किसी तरह बचने का प्रयास करते हैं।

डॉ. लोहिया ने अपने समय में जो समस्यायें इस क्षेत्र बताई थी, कमोवेश आज भी परिस्थिति उसी तरह की है। उन्होनें इन समस्याओं समाधान देते हुये शिक्षा व्यवस्था में सुधार एवं परिवर्तन हेतु अनेंक सुझाव दिये थे।

डॉ.लोहिया के शिक्षा व्यवस्था में सुधर हेतु सुझाव

डॉ. लोहिया जानकारी हासिल करने के साथ–साथ दृटि में सुधार की आवश्यक मानते थे। उनके अनुसार शिक्षा के स्वरूप उसके उद्देश्य के मामले में कोई बुनियादी दृष्टिकोण भला कैसे बने, जब समाज के बारे में ही किसी प्रकार की दृष्टि नहीं बन पाई है। इस दृष्टि निर्माण हेतु उन्होने कहा '' 6 से 12 वर्ष तक के बच्चों के लिये स्कूल एक कर दिये जायें। कम से कम प्रारंभिक शिक्षा समानता के स्तर पर आ जाये। इसके लिये 6 से 12 वर्ष तक के बच्चों की पढ़ाई के लिये म्युनिस्पल और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड को स्कूल खोलने के सिवाय और किसी को स्कूल खोलने का अधिकार ही न दिया जाये। इसका फल यह होगा कि भंगियो और टाटा–बिड़ला के लड़के–लड़कियॉ उसी स्कूल पढ़ेंगे। इसका अवश्यंभावी प्रभाव शासक वर्ग पर भी पड़ेगा , क्योकि जब उनके बच्चों की शिक्षा इस प्रकार के स्कूलों में बिगड़ने लगेगी तो स्वार्थवश सही पर वे कुछ सुधार लाने की कोशिश करेंगे। इससे निश्चित रूप से समाज और जीवन के प्रति उनकी एक दृष्टि बनेगी।

डॉ. लोहिया ने प्राथमिक शिक्षा में सुधार पर अत्यधिक बल दिया था उनका विचार था '' समाजवादी पार्टी का सिद्धांत है कि प्राथमिक स्कूल खाली एक किस्म के हों। मास्टरों की एक तरह की तनख्वाह हो और बच्चे को पढ़ाने की एक तरह की किताबें। कुछ कहेंगें कि प्राथमिक स्कूल के अलावा जो दूसरे स्कूल हैं उनके बारे में क्यो नहीं यह सिद्धांत बनाते। अभी उसकों छोड़ दो क्योकि कोई भी काम होता है तो एक मंजिल के होता है।

डॉ. लोहिया के अनुसार– प्राथमिक शिक्षालयों में आर्थिक वैषम्य दूर करें। वैज्ञानिक तकनीकी और औद्यिगिक स्कूल बड़े पैमाने पर खोले जायें जिसका लक्ष्य विषय का ज्ञान हो खोज हो न कि सतही और व्यर्थ भाषा की शैली, जैसा कि आजकल होता है। गांवों में ही क्योकि समूचे देश में शिक्षा का आधार बदलना पड़ेगा। न इसमें खोज है, न हुनर। किसी भी देश में और किसी भी समय खोज और नई जानकारी से ही देश की शिक्षा सजी बनी रहती है। हमारे देश में खोज का स्त्रोत बंद हो गया है। उसी के साथ–साथ भिन्न–भिन्न विषयों का हुनर भी। जर्मनी और स्वीडन आदि देश काहे पर बने हैं। किसानों और मजदूरों के बड़े वर्ग पर, जो विश्वविद्यालयों मे इंजिनियरिंग अथवा ऊँची शिक्षा नहीं पाता लेकिन कभी नौकरी कभी कारीगरी के स्कूलों में शिक्षा पाता हुआ निरंतर अपना हुनर बढ़ाता है।

''प्राथमिक शिक्षा का बड़ा हिस्सा कृषि एवं उद्योग संबंधी गतिविधियों के इर्द–गिर्द बुना जाये।'' लोहिया के उपरोक्त विचारों से स्पष्ट है कि वे रोजगार मूलक शिक्षा के पक्षधर थे।

डॉ. लोहिया मातृभाषा में शिक्षा देने पर बल देते थे तथा अंग्रेजी को भेद उत्पन्न करने का माध्यम मानते थे। वे अनुवाद काम में तेजी लाने के हिमायती थे कि विश्व के विभिन्न भाषाओं के ज्ञान भंडार का सदपुयोग किया जा सके।

उन्होने सुझाव दिया कि ''साक्षरता सेना बनाई जाये, ताकि निरक्षरता को दस सालों में खत्म किया जा सके।

डॉ. लोहिया अध्ययन की पद्धति चुनने की स्वतंत्रता विद्यार्थियों को देना आवश्यक मानते थे ताकि अध्ययन के साथ–साथ एक दृष्टि दुनिया को जानने का एक ढंग बन सके। वे जर्मन के शिक्षा के तरीके के समर्थक थे, क्योकि वहॉ अध्यापक शिक्षार्थी के तर्क और खोज करने की आदत को जागृत करने का प्रयत्न करते हैं। '' शिक्षा के साथ तर्क और एक प्रकार की दृष्टि का भी निर्माण जरूरी है, अन्यथा शिक्षा जिंदगी में किसी भी प्रकार की चेतना नहीं ला सकती ''

लोहिया पाठ्यक्रम को व्यावहारिक एवं जीवन उपयोगी बनाने हेतु कृषि एवं उद्योग की जानकारी को प्राथमिकता देना चाहते थे। वे बार–बार पाठ्यक्रम के बदलाव से व्यथित थे। उनके अनुसार ''बच्चों की पुस्तकें उच्चस्तरीय तथा जानकारी का स्त्रोत होना चाहिये। उन्हें बार–बार बदलने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिये और लेखक प्रकाशक के रैकेट खत्म होने चाहिये।

तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था से असंतुष्ट होकर लोहिया ने कहा था– '' कभी–कभी तो ऐसा लगता है कि विज्ञान और इंजीनियरिंग को छोड़कर विश्वविद्यालय के बाकी विभाग 5 वर्ष के लिये बंद कर दिये जाये तो बहुत अच्छा तब शायद एक नई परंपरा बने। शायद भाषा के कारण शिक्षा की परंपरा टूट गई है और शिक्षा का पौधा देश की मिट्टी से अपना आहार नहीं पा रहा है। 90 प्रतिशत जनता आज शिक्षा से दूर है।

मनुष्य के समृद्ध विकास के लिए समग्र दृष्टिकोण अनिवार्य है मनुष्य के विकास में शिक्षा एक अपरिहार्य कारक है डॉ राम मनोहर लोहिया भारतीय समाजवादी विचारधारा के प्रमुख आधार स्तंभ थे उन्होंने विद्यालय शिक्षा के लिए समृद्ध दृष्टिकोण की अनिवार्यता पर अत्यंत महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए जो आज भी प्रसांगिक है अतः वर्तमान में शिक्षा व्यवस्था को अधिक प्रभावी बनाने हेतु डॉक्टर लोहिया के विचारों योजनाओं एवं सुझावों का अध्ययन एवं विश्लेषण उपयोगी सिद्ध होगा

निष्कर्ष

विद्यालयीन शिक्षा संबंधी डॉ.लोहिया के उपरोक्त विचारों के वर्णन से निम्न निष्कर्ष प्राप्त होते हैः–

1. डॉ. लोहिया प्राथमिक शिक्षा को अत्यधिक महत्वपूर्ण मानते थे, क्योंकि यही भावी पीढ़ी के निर्माण में अत्यन्त महत्वपूर्ण चरण है। यही शिक्षा की नींव पड़ती है।
2. शिक्षा का उद्देश्य अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण करना है जो समाज के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने के लिये बच्चों को तैयार करता है। रोजगार प्राप्ति इसका दूसरा उद्देश्य है।
3. शिक्षा विद्यार्थी की जानकारी एंव सूचना देने साथ ही साथ तर्क एवं खोज करने की प्रवृत्ति का विकास करें।
4. शिक्षा समाज में समानता स्थापित करने के लिये होना चाहिये न कि असमानता बढ़ाने लिये। समानता बढ़ाने के लिये आवश्यक है एक जैसे विद्यालय एवं पाठ्यक्रम।
5. प्राथमिक विद्यालय केवल सरकार द्वारा संचालित हो इससे सभी वर्ग के बच्चे एक ही स्कूल में पढ़ाई करेंगे। परिणाम स्पष्ट अमीर–गरीब, ऊँच–नीच का भेद समाप्त होगा।

पाठ्यक्रम बार–बार परिवर्तित न किये जाये एवं वे सार्थक हों । कृषि उद्योग एवं कौशल विकास को अधिक महत्व दिया जाये। शिक्षा मातृभाषा में दी जाये।

शिक्षा की समस्याओं एवं समाधान हेतु समग्र दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है, तभी ठोस परिणाम हो सकते हैं।

स्पष्टतः आज भी प्राथमिक शिक्षा की समस्यायें कमोबेश वही है जो डॉ. लोहिया ने अपने समय में देखा था, अतः उनके बताये समाधान आज भी उतने ही प्रासंगिक जितने उस समय थे। वैसे तो केन्द्र एवं राज्य की सरकारें निरंतर प्रयत्नशील हैं कि प्राथमिक शिक्षा में गुणवत्ता वृद्धि हो सकें। बनाई योजनाएं कुछ भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाती है और कुछ का क्रियान्वयन ईमानदारी से नहीं होता, अतः अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं होते।

डॉ. लोहिया द्वारा दिये गये सुझाव में अत्यन्त महत्वपूर्ण है ''सभी बच्चों के लिये एक ही तरह की शिक्षा

व्यवस्था (एक ही तरह का विद्यालय एवं पाठ्यक्रम) जिससे समाज में समानता स्थापित करने में बहुत मदद मिलेगी। और शिक्षा का मुख्य उद्देश्य प्राप्त करना संभव होगा। इन सभी के लिये ''शिक्षा के संदर्भ में समग्र दृष्टिकोण'' अपनाने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *देशबंधु (दैनिक) 22.03.2014*
2. *राममनोहर लोहिया रचनावली भाग 4 पृष्ठ 46*
3. *राममनोहर लोहिया रचनावली भाग 4 पृष्ठ 46*
4. *राममनोहर लोहिया रचनावली भाग 4 पृष्ठ 46*
5. *राममनोहर लोहिया रचनावली भाग 4 पृष्ठ 46*
6. *राममनोहर लोहिया रचनावली भाग 4 पृष्ठ 46–47*
7. *राममनोहर लोहिया रचनावली भाग 4 पृष्ठ 46–47*
8. *राममनोहर लोहिया रचनावली भाग 4 पृष्ठ 48*
9. *राममनोहर लोहिया रचनावली भाग 3 पृष्ठ 93*
10. *राममनोहर लोहिया रचनावली भाग 3 पृष्ठ 93*
11. *राममनोहर लोहिया रचनावली भाग 1 पृष्ठ 467*
12. *राममनोहर लोहिया रचनावली भाग 1 पृष्ठ 466*
13. *राममनोहर लोहिया रचनावली भाग 1 पृष्ठ 336*
14. *राममनोहर लोहिया रचनावली भाग 4 पृष्ठ 47*
15. *राममनोहर लोहिया रचनावली भाग 4 पृष्ठ 47*
16. *राममनोहर लोहिया रचनावली भाग 4 पृष्ठ 540*
17. *राममनोहर लोहिया रचनावली भाग 4 पृष्ठ 48*
18. *राममनोहर लोहिया रचनावली भाग 1 पृष्ठ 578*
19. *राममनोहर लोहिया रचनावली भाग 4 पृष्ठ 46*
20. *राममनोहर लोहिया रचनावली भाग 1 पृष्ठ 466*
21. *राममनोहर लोहिया रचनावली भाग 3 पृष्ठ 94*